

DPN 5310

Title: सिद्धिलक्ष्मी स्तोत्र <sup>LAKSMI</sup> ~~LAKSMI~~ SIDHDI ~~LAKSMI~~ STOTRA

Run. No. 6001

Cat. No. 170

Micro. No.

Subject <sup>गान व विधि</sup> Hymn and ritual

Religion: Hindu / Bauddha

Language: Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. / *Newa direction in a stray portion of ritual text.*

Size in cms. 8 x 21

Folios 17

Lines (in a page) 6 - 7 (irregular)

Compl. / Incompl.

Chapt. / act / verses 1-36

Author / translator X

Scribe / donor X

Date: NS / SS / VS / KS X

Ruler / place X

Script: New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus.: Mandal Figure

Material: palmleaf / paper / thyasaphu /

Mantra monograms.

Condition: fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon:

Beg. श्री गणेशाय नमः॥ ॐ नमः श्री सिद्धि लक्ष्मी देव्यै . . .  
Col. ॥ ३५ ॥ इति सिद्धिलक्ष्मी स्तवः समाप्तं ॥



ॐ श्री ह्रीं सिद्धि लक्ष्मीं नमः ॥

0

cms

5

10

15

20



ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥







एकामनूयमदनकलयुगसर्वसिद्धाक्षनार्त्तं श्रीं १४ का ॥ नर्त्तनसमर्पणमणिद्वकला  
 लक्षितं यागपीठम् ॥ कांतिना ॥ अदिद्यालिर्जयनमसूखकनं विन्दुनूर्यखनूर्यं श्रीं निः  
 खानन्दसुनूर्यतदुयनिमधिरं षड्युकावैविशिनं ॥ स विद्यासिद्धान्तियं तददुरुनूर्य  
 वं द्विमयी ० ललाट ॥ नर्वद्यापसमर्पणं सिगिलयजननी नूदगकिमिश्रये ॥ ॐ गणेश  
 दवदेवीत्वकलकलयुगानन्ददारीखनका ॥ ॐ शुक्लवद्वरुणाय गुरुयहवलीसिद्धिदद्याः  
 धनूया ॥ श्रीं निर्याकिनासूत्रकारगडदितयवानन्दगकि १४ सिद्धा ॥ श्रीं कूर्चनीगणकाम

नक्षत्रितवनगनू श्रीकाञ्चनाम्भामासि १॥ ॥ सन्तानमनूमा ॥ नक्षत्रयसुगधवता  
 निर्गमश्चैवडाशानसिद्धयसूदाहरं ॥ सिद्धादवीगुहावा सीवृक्षश्चैवकदम्बक ॥  
 सैकशसिद्धकथाकाञ्चनानूग्रहवासिनी ॥ गुरुचन्दयून्याकरिदामन्तानमवच ॥ ग  
 रुक्षमनिकादवीवाममाग्नेयकीर्तिता ॥ अन्वयययय ४ सावद्रविकानश्चकाक ॥  
 ॥ जन्मवक्त्रगिलासि ॥ श्रीं सिगि १४ श्रीकामनूयक ॥ कीर्तिश्चिश्चिनिवृक्षच सिद्धिश्चैव  
 सागन ॥ शुक्लवर्गस्यदवगियाजानागिकूलकर्म ॥ धातुगभावरुदनचार्य कूटकमकर्त

१३२



धूर्तिर्गतिर्गिरिगुह्यसिध्यायनिवदयत् ॥ ॥ वन्द्यसदासकलकोलिकमानवदत्तं क्षण  
 ध्वननवकपालकदम्बमाली ॥ खट्वाङ्गखड्गवन्धुवककाद्यहर्षं दानेक्षितीतिवन्धुः  
 ध्वनवन्धुगया ॥ ॥ श्रीगणेशमनवदकनाथलुंगियसिद्धः स्कन्दः सुवाविज  
 नकाननधूमककुश ॥ गेनीसुग ॥ गकि कलितामयदधनः पायात्मनकवसनः ॥ गि  
 खिवाहनावः ॥ ॥ वदकस्य ॥ ॥ सिद्धवमान्मदमृक्तिगवककृष्ण निर्जिह्वा  
 धनयथाधनदरुलक्षिः ॥ विजकुलवववमादकमदसूतं पायादयंगलयतिः

सकलार्थदाता ॥ गणपतस्य ॥ ॥ वृक्षीनाथतवपादयुगीनमामि चर्यनाथ  
 यदर्थकजमाययथ ॥ मेरुगमानमिकमर्चनमानयथा ॥ सुषुद्धिकुववर्नसगतं  
 नमामि ॥ ॥ गिगुद्धि ॥ ॥ यकजमानिभिसरुमुविमानवच्चः सन्निष्ठकलिगार्थक  
 जवकम ॥ ॥ आनन्दरेववनवात्मककृष्णिक ॥ सुखीनमामुववसगतं गिवाय ॥  
 नवात्मनः ॥ ॥ निखीनमामिगुवयकि गणसमक्ता ॥ निध्वायसिद्धिकलितानधिमानव  
 द्यान् ॥ यथासकच्चवलयकजवर्णसंग ॥ त्वायायतववलिमलुलवाजलक्ष्मीगुवय

श्री३



कि॥ ॥ सीमावधानविषमादि विदष्ट उक्ताः संजीवनाय शिवसिन्धु विवरु मनु४।  
 मं श्रवणाय गणि (ग) ख न द ह ल क्षा वल्लिख नृप स हित मू द गं द दामि ॥ डायथा  
 ॥ ॥ दीक्षा विदू ल सि ग लाल समी न व त्या स्तं धा भित ४ य ध म गा गि वि वा ज य गुणा ।  
 गी ४ क द द न य नै ४ स्त न रा न व त्या धा मा श्रित ४ पृ थू त र्थ ४ गि गि क ४ ना थ ॥ श्री क  
 ४ म ॥ ॥ हं स कि गा क ल ण द पु व ना द मूर्त न क्षा रु मा कालि त कृ ल मा व रु की  
 ॥ या का थ ना ड व न क ण व पि म ला रा वा म्नी क ना ड म र्ग म म सा गु रा नि ॥ वा म्ना

॥ ॥ व द्वा मृ गा द वा रु म दू ति शु कानि ४ मृ ग नि गू ल व न या ग व ना गि न गा ।  
 अ र्द्ध नृ सी वि द ध गी वृ थ रं कि गा या मा रु ग्ध वी रु व रु सा व व दा स दा म ॥ मा  
 रु थ यो ॥ ॥ सिं ह व र्च स दृ ण य नि मा व रु की वि दू ल्य का ण य नि म दि ध  
 गी व र्ग किं । मा यू व मा स न स मा स्ति त वा लि का मी को मा नि का रु व रु म शु र दा  
 रु नि थ म ॥ को मा यो ४ ॥ ॥ ग व न स त दू ति नि रा ग वृ ण स न स्त मू र्ति न र्थ  
 क उ म र्ख नि व यो व ना थ म । गं खा सि व क ग द यां कि त वा नू रु स्तं श्री व र्च



वींमवनतामिरुतोमिदवीम॥ वेष्ट्या॥ ॥ ६८॥ लुकिंशुकदलाधिकन  
 ककार्किं धानागिधानकठिनान्नगकालवर्कांमीनासियागवनदीकिगवा  
 वृहत्तां वावाहिकामिहियानगगान्नसामि॥ वावाका४॥ ॥ ६९॥ स्याजी  
 वदह नीनमृचियरुनीं नगाल्यसेदशगोशयनि॥ ६१॥ शमानी॥ सेवावतामन  
 गगंधिजवशरुसा मेदीनमास्यसुवकिन्नवदववद्याम॥ ७०॥ ॥ ७१॥ ॥  
 यतस्त्रितानकंदवधकपालमालां खद्यामृतिहिमकवविबयागुरुसा॥ ७२॥

कनालवदनांजगदकधारीं चामृष्टिकामरिनमामिसदायसन्नाम॥ वावा  
 ७३॥ ॥ ७४॥ ॥ ७५॥ ॥ ७६॥ ॥ ७७॥ ॥ ७८॥ ॥ ७९॥ ॥ ८०॥ ॥  
 मोरुमार्ता॥ खद्युगिष्टूलववदारययकुरुसां लश्रीन्नसामिमरुगीमरुनीय  
 मूर्किम॥ मरुलश्री४॥ ॥ ८१॥ ॥ ८२॥ ॥ ८३॥ ॥ ८४॥ ॥ ८५॥ ॥ ८६॥ ॥ ८७॥ ॥ ८८॥ ॥ ८९॥ ॥ ९०॥ ॥  
 कार्किं यथशस्यथश्वदुर्जगदं॥ गुर्जगुलशर्मदधानम॥ कार्किं दिव्यामृ  
 र्पगिनयनमखिलमर्थयकूपवीतिं धर्वस्वद्वन्द्वमूर्किंमकेलशयरुर्वनीमि



नार्थमिच्छाम ॥ सुकृतस्य ॥ ॥ २७ ॥ मृगमतिदूरे यवकवीर्जं कृतानिः  
 पुममनसं यतिपुममृगं । रुदितं नृपदरुना चित्रमथमाना सामधिर्यदि  
 लुण्ठनं विनाशनीया ॥ दुग्धपुत्राया ॥ ॥ २८ ॥ यून कृत्राणि नृपाना  
 माला यश्चक्रितारयकनावन दागिनगा । वचुकवर्षुमदृशम्वनमावहनी  
 वागीश्वरी नृपमंडिता चकार ॥ वागीश्वरी ॥ ॥ २९ ॥ शिवालयमथयदल  
 माशिवृत्तं तदाक्रमदलर्यक यमपृष्टं । द्वायेष्टुर्द्विष्टमहितीरि कृत्तं

वीष्मं तच्चक्रमलमलं वीष्मं यामि ॥ कर्मणः ॥ ॥ ३० ॥ याका । लामान्तर्य  
 वयुर्गमहितायश्चकलकृत्तं ॥ ॥ ३१ ॥ शिवालयमथयदल  
 का । लामान्तर्य । यामा यश्चक्रमलमलं वीष्मं यामि ॥ कर्मणः ॥ ॥ ३२ ॥  
 यकमकलमहितायश्चकलकृत्तं ॥ ॥ ३३ ॥ शिवालयमथयदल  
 यकमकलमहितायश्चकलकृत्तं ॥ ॥ ३४ ॥ शिवालयमथयदल  
 विष्मका । लामान्तर्यमलकयवजृष्टं नृपाना । सामधिर्यदि



[illegible][illegible]

四



15

10

5

0

१२ ६२ १०१  
 श्री नक्षत्रिस्थायवद्रुक्रममवावर्तनाकणशाना सावेथीकृद्विस्थापकटितविम  
 लल्लुदिवीयमात्रा ॥ **यद्रुका** ययकावावद्रुगुणितनयावर्तनाधावद्रुया भक्तेश्व  
 श्रद्धागोथीयनिवृत्तवद्रुवसी ववाधनिमोदी ॥ बधाष्टीवकगुचविशुजनरयद्रु  
 द्रुवागसदृष्टि ॥ साधवी कृद्विकाख्यागिगुवननमितायादुर्मासिकयुका ॥ मि  
 का कावालवक्राकृद्विलयनिरायदिवीधोगयनी चकधमवर्तयनीयतवि  
 युनतवानगिभिरिष्टयूनयनी ॥ चर्धधारुकि युका ॥ समवर्तितमर्तवर्तनातजसा  
 च धवीनांकृद्विकाख्यांनियतगुणिवयामानधीकाकथान्या ॥ यासाष्टमृष्टिका  
 नायवगिदतिवगाथविशुद्धारुगमख्या पी ॥ ० ॥ जानन्धनाश्चक्रमस्यविद्वताथानि  
 रिद्वीनवृन्दे ॥ गन्धर्वे ॥ सिद्धमर्थेगुरुगणमनुजवर्तितामर्तकाल साधवीकृद्वि  
 काख्यागिगुवननमितायादुर्मासिकयुका ॥ सिद्धनाक्रान्तीनागियूनयनगताया  
 तयनीसमस्त गङ्गाकृद्विकामाधिविषयथकलविषयानकवविष्ट ॥ वकावर्त  
 युनयावकलकलमयायावयनीका ॥ किनाकिडलकलामदमूदितमया  
 नि

Cms.

5

10

15

20

2.5



५

0

Cms.

5

10

15

20

११० १ सिद्धि लक्ष्मी या ॥  
१ वरि मया वद ह द म ग म ॥ १ स्मनां सु  
१ य कि म या भु ॥ ४ ॥

१६०



5

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

११०

सिद्धि लक्ष्मी या ॥

वसिष्ठ मन्त्रा वद ह दाम्नि मा ॥ १ ॥ स्मर्त्तुं

१ यत्किमया भु ॥ ४ ॥

२/३

५२

१६०

De Kite ५२

0

Cms.

5

10

15

20



१ क क ना सि  
१ य थ द रु म  
१ ति य द रु म  
१ सु म्मा र  
१ न्ना र  
१ ध न्ना र  
१ य न्ना र  
१ सिद्धि लक्ष्मी  
१ न्ना र

१ उं दूं दूं मा रु का ना य न र सिद्धि लक्ष्मी  
१ ॥ १०६ ॥ आ प थ सु ॥ म गुरु मा र न्ना र  
१ वि शी ॥ दी ल व न्ना र  
१ का ली ॥ आ सिद्धि लक्ष्मी ॥ आ गी य न्ना र  
१ ल स क व नी ॥ म्मा र  
१ क रिया नि वृ य थ ॥ ॥ गी र या न्ना र  
१ दि यूर र व नी का स थ द थ ॥ कां ४

१ द व द्वा क य आ न्ना र सि या दू ल व द्वा थ नी ना या न्ना र

१ उ न म सि वा य  
१ न्ना र  
१ न्ना र

१ नि स व न्ना र  
१ न्ना र

१ य न्ना र  
१ न्ना र  
१ न्ना र



15

पे २

विं ल

कृत्तिका चाम्यना ॥ पीठना नाथपीठं सुमलदित कलामिन्दु लक्ष्मी यम  
 हा प्रसन्न नेकी के मंद सकला वक्यथा यत्र ॥ सौम्य सादर की सुन वन विवर्न  
 चिन्मय ॥ १३ ॥ काशयनी शिव विविकिन ॥ १४ ॥ कृत्तिका चाम्यना ॥  
 सुमलमाला सुकलिमलदहन निष्कलया मतल ॥ जी जय मास नक्तु धिव वयि  
 यद कोलिनी निःशय यत्र ॥ वाहुर्वल्लु यवा वयत्र नसि समय गड विम्बान वक्तु अन्त  
 सुख निष ॥ सुमकल गनू गन कृत्तिका चाम्यना मा मि ॥ अया न वक्तु गन वयि वयम

॥ ११ ॥

✕

10

5

स्तिता ह्यमृगाम् निर्जायशून्य चारी वव नित्य गिदिन वक्तु वक्तु वक्तु ॥ वि  
 स्तन ग किचक कमनिक मय दधायनी शरीर मधुमाया तु निर्युक्त वक्ति  
 वरय कृत्तिका सिद्धि मा नम ॥ त्वमाता सिद्धि वक्ति गत य वल यिग वक्ति कायिका ॥  
 माना तय स्तनान वक्तु सिद्धि गिदिन ॥ १५ ॥ वयनी ययु ॥ विम्बान विन्दु रिः  
 नागन विपुठ पृष्ठ मूल दवी कृत्तिका चाम्यना वक्तु निर्युक्त मनीषा विदि गिदिन कृत्तिका  
 कृत्तिका चाम्यना ॥ नागन नाद यनी सच विदल दला मा यि या यदल स्तु सावका

0

Cms.

5

10

15

20

2.5







[illegible][illegible]



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ नमः श्रीसिद्धिलक्ष्मीदेवे ॥ नमस्तद्वदवनि सिद्धिलक्ष्मी  
 मङ्गलसाय यथागिवा मङ्गलद्वी वाजलक्ष्मी नमस्तुते ॥ १ ॥ यागिनी सिद्धि वृषाच  
 कवृषा मय वृषिणि । सा न कान्त कवृषाच । मातृकाष्टक मध्वग ॥ २ ॥ जगत्मातृ  
 ध्वनीद्वी । जगत्मातृ वरुणातृ । जगत्मातृ कविद्वी । जगदा नन्दका विणी ।  
 ३ ॥ गौलाय जननीद्वी । वक्रिचक्रस्य मध्वग । षट्कोणचाष्टकं च । वक्रुवा  
 वसमश्चिरे ॥ ४ ॥ सिद्धिलक्ष्मी नमस्तुते । वक्रुवाष्टकं वृषिणी । हिमवत्कुन्दम  
 काग्न । शुद्धसुदि कर्माणिगा ॥ ५ ॥ सर्वेश्वरानिगाद्वी । कालामालासक  
 सा । अटाहृतनिर्गयका । नीलकुचिरेमृदुजा ॥ ६ ॥ विनयतिवा ॥ धेति द

गङ्गादेवधुनिनी। खट्वाङ्गसिनाधुवा वनाद्यैश्चदक्षिणी॥ १॥ काच  
 धूलेश्यागश्च अतयामुधुवामक। मन्त्रालिकावर्मयूका रुमवत्तायल  
 कृता॥ ८॥ शुक्लवसुयविधाना मदिनानन्दयतमा। वृद्धस्कंधसमावृष्टा  
 शुद्धसुटिकसंनिता॥ ९॥ चक्रवकुणिनयनं खलुन्दकृतं। यथा। चक्र  
 र्द्धजामरुंशानि दयुरुसकृताञ्जलि॥ १०॥ यथासनायिष्ठाकुं ध्वनवर्धु  
 महावला। काटिपू। पुन्दुरादवी नानागुम्भुमारिता॥ ११॥ नानावृषध  
 वादवी नानागुम्भुमारिता। वरुवकावडुआ वरुयादामहावला॥

सं३ दक १०२



१२ ॥ विश्वरूपामरुगानि लक्ष्मिपुत्रावगाविनी ॥ चिकामघिनिगायत्री चि  
 निगार्थरु लयदा ॥ १३ ॥ नमः स्वाहा श्रवणीषट् द्रुकावसुवयल्लुगं ॥ यतमन  
 मलायत्री मनुपुत्रावगावलि ॥ १४ ॥ आध्वन्युक्तिगायत्री कुडंगकटिलाह  
 ता ॥ सय्यकुलनीगकि अगम्यागमवाविनी ॥ १५ ॥ गनेष्टगनेष्टयुवावली  
 वक्तापुत्रावगाविनी ॥ अनिसादेमलासिद्धिः मद्धिसिद्धिः यदायनि ॥ १६ ॥  
 यथात्मापिष्ठसंयुक्ता बाहुलक्ष्मीयदायलि ॥ लक्ष्मीवृद्धयतदवि दीयकः  
 यवमध्वनी ॥ १७ ॥ सुलपुत्रमरुगानि नवस्थाधिगतदय ॥ सकादशाय

नवम सकयध्वमगिकन ॥ १८ ॥ उकाहनमलायत्री शुक्लपुत्रायतनः  
 मः ॥ यतमनमलायत्री मनुमागमरुध्वनी ॥ १९ ॥ सर्वपायविनिर्मुक्ता  
 आयुवावायवर्धनी ॥ लक्ष्मीयुक्ता रुवर्द्धमान मदीनारुगअनुवत ॥ २० ॥  
 सकसागवययर्त्त गीर्धस्नानसकुरुवर्त्त ॥ देहलुण्ठिदहंभवा यथायैरु  
 लोनाशिवत ॥ २१ ॥ रुवाअगदिदंरुवो वक्तापिष्ठयुक्तिर्ग ॥ मारुलाः  
 यिरुलायैव वक्तापिष्ठयुक्तिर्ग ॥ २२ ॥ विनर्त्तयातकादिस्था साकेदी  
 वसुयसुर्व ॥ विमर्त्तयष्टय ॥ २३ ॥ एकचिरुसमाहर्त्त ॥ २४ ॥ वधनामय



१५  
 १०  
 कथं न निमज्जति किं कानि च। दावा मकतयगणि मंरुयत्मा वयत्मा दा॥ २४  
 ॥ अत्र विषमं धाव सिंहाद्यादिर्मकट। विषमं गुरु न व। नो रुतायः  
 स्मान्तरुथ॥ २५ ॥ यत्नमकादिद्विष्टुषु यत्नकृत्वा विनाशयत। कालिक  
 नादिनश्च नि विषनाशितमंरुवत॥ २६ ॥ रुतायस्मालयकादि नवमावि  
 विनाशनी। द्रवचाहथमदीनि नाशयस्मवत्तानि च॥ २७ ॥ अविनिगतानि चः  
 धानि सदा तस्य रुयं गिरु। अलक्ष्मी समनीरुया ३४ खदा विदनाशिनी ॥  
 २८ ॥ लक्ष्मी श्वरीति विख्याता वरुणा मलावला। मलालक्ष्मी मलाका

५  
 ०  
 का सर्वसौभाग्यदायनि॥ २९ ॥ मदिवात न च देवता मदाद्युष्टितलाचनी  
 ॥ आनन्दसमरुतानि विश्वदुष्टावगाविणी॥ ३० ॥ वा क्लीबीदीवकीमावि  
 वेष्टुवीधावधानका। माहृदिवल्लिकाश्च वल्लिकाष्टकमध्वग॥ ३१ ॥  
 अष्टादविमलमिद्धि सिद्धियागिनिमध्वग। पुत्रयद्विद्विक्ताना गन्धयुध  
 दितिसुधा॥ ३२ ॥ धुययत्नवकपूर्व कस्तुबीचसमायुत। आवाधिताऊ  
 गत्तवे किलाय मयिपुत्रयत॥ ३३ ॥ जाधमद्विषश्च गभवधेवयपु  
 जयत। न शययामिमादय जयत्तवमदावधेवद्विनाश किमकन अ  
 ॥ ३४ ॥



